Chapter-3

तृतीय अध्याय
रचनायें और उनका क्रम

तृतीय अध्याय

रचनायें और उनका क्रम

अखा की रचनाओं की संख्या - निर्धारण में " सागर महाराज " और "हंस निर्वाण आश्रम, किशनगढ़, के गादीपति स्वामी श्यामानंद जी" के कथन विचारणीय है।

सागर महाराज ने स्व संपादित " अप्रसिद्ध अखायवाणी " में बताया है.. " काशीपुरी के अत्याग्रही ब्राह्मण पंडितों तथा दंडी संन्यासियों ने मिलकर अखा जी की कई हस्तलिखित पोथियाँ गंगा में फेंक दी।"

स्वामी श्यामानंद जी का कहना है कि - प्रस्तुत ~~अखाम~~ आश्रम पहले जब सिंध में था तब उसमें संत अखा की बानी की कई हस्तलिखित पोथियां थीं परंतु भारत-पाकिस्तान बँटवारे जनित हत्याकांड में पूरे आश्रम को आग लगा दी गई जिसमें अन्य ग्रंथ समेत अखा जी की बानी की सभी पोथियाँ जल गई।"

इन दोनों सूचनाओं के साथ-साथ फार्बस गु०सा०सभा, बम्बई तथा गुजरात व०सों०अहमदाबाद के ग्रंथ भंडारों, बड़ौदा के डॉ०मंजुलाल मजमुंदार और डॉ०योगीन्द्र त्रिपाठी के निजी ग्रंथ भंडारों तथा अन्यत्र से प्राप्त अखा की अप्रकाशित रचनाओं की पोथियों के अतिरिक्त " हंसतीर्थ निर्वाण आश्रम, सिंध " से प्रकाशित" मजनविलास" में संपादित अखा की हिन्दी-गुजराती रचनाओं की जो महत्वपूर्ण राशि उपलब्ध

हुई है इन सबके ऊपर विचार करने से प्रतीत होता है कि अखा ने लिखा तो बहुत कुछ है किंतु उपलब्ध रचनाओं के अतिरिक्त उनका कुछ साहित्य नष्ट हो गया है और काफी साहित्य प्राचीन ग्रंथ भंडारों, मंदिरों एवं धर्मभावनावाले लोगों के घर में अमुद्रित रूप में दबा पड़ा है। कवि की उपलब्ध रचनाओं के अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि प्राप्त रचनाओं के अतिरिक्त अखा की और भी रचनायें रही होंगी।

विभिन्न विद्वानों द्वारा उल्लिखित रचनायें इस प्रकार है:

श्री कृष्णलाल झवेरी ने अखा की रचनाओं में - [१] अखे गीता, [२] चित विचार संवाद, [३] पंचीकरण [४] गुरू शिष्य संवाद, [५] अनुभव-बिंदु, [६] कैवल्य गीता, [७] ब्रह्म लीला : हिन्दी :, [८] परमपद प्राप्ति [९] षाट्पदी - छप्पा और [१०] पंचदशी तात्पर्य की गणना की है।[१]

श्री नर्मदाशंकर महेता उपर्युक्त कृतियों के अतिरिक्त [१] फुटकल पद, [२] सोरठा अथवा दुहा अथवा परजीआ, [३] संतप्रिया - सर्वांगी प्रकरण का होना बताते हैं।[२]

---

१. गु॰मा॰ना॰पा॰सू॰ अने व॰मा॰सू॰स्तं॰ पृ॰७०

२. अखो: नर्मदाशंकर महेता, पृ॰१७

सागर महाराज ने अखा की [अ] गुजराती रचनाओं में [१] कक्का, [२] बारह मासा, [३] सातवार, [४] भजन - प्रभातीपद समेत, [५] अवस्था निरूपण एवं [आ] हिन्दी रचनाओं में [१] जकड़ी [२] झूलना, [३] एकलदा रमणी और [४] भजनों का सर्व प्रथम संपादन किया है[१]। इन रचनाओं के अतिरिक्त " संत प्रिया " के दूसरे प्रकरण - "अन्वय व्यतिरेक" की भी सूचना सागर महाराज ने दी ।

डॉ०के०एम०मुन्शी ने अखा की हिन्दी रचनाओं में " ब्रज लीला " के साथ " पंचदशी तात्पर्य " का उल्लेख किया है[२]।

आचार्य के०का०शास्त्री ने अखा की [१] विष्णुपद और [२] धुवार्य नामक दो और गुजराती रचनाओं का उल्लेख किया है[३]।

आचार्य उमाशंकर जोशी ने उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त [१] " संतनां लक्षणो " अथवा कृष्ण उद्धव संवाद[४]" और [२] अवस्था निरूपण[हिन्दी][५] का उल्लेख किया है ।

डॉ०योगीन्द्र त्रिपाठी के पास से अखा के " सिद्धांत शिरोमणि " नामक ग्रंथ के होने की सूचना मिली है ।

---

१. अप्रसिद्ध अखयवाणी भाग २.

२. गुजरात एन्ड इट्स लिटरेचर. क०मा०मुन्शी. पृ०२३१

३. कविचरित - के०का०शास्त्री, भाग १ और २ पृ०५७०

४. अखाना छप्पा : भूमिका पृ०२१

५. अखो - एक अध्ययन : पृ०१७८ से १८०

डॉ०अनिलकुमार त्रिपाठी के पास से अखा की गुजराती गद्य कृति " चतु: श्लोकी भागवत " उपलब्ध हुई है ।

" अक्षय रस " में "धुआसा" नामक हिन्दी रचना का संपादन किया गया है।[१]

" अखानी वाणी " में " जीवन्मुक्ति हुलास " नामक लघु रचना के साथ अखा कृत " पत्र " और " आरती " का संकलन किया गया है।[२]

बृहद काव्य दोहन भाग ३ में " कल्याण गीता " की सूचना मिलती है।[३]

पूजारा कानजी के पास से अखा कृत " सिद्धांत बिंदु" के मिलने की सूचना प्राप्त हुई है।[४]

गुजरात व०सो० अहमदाबाद के ग्रंथ भंडार की हस्तलिखित पोथी संख्या ७४० में अखा कृत " वसंत या फाग के पद " मिलते हैं ।

डाहीलक्ष्मी लायब्रेरी, नड़ियाद के ग्रंथागार में अखा की " काया शोध " नामक हिन्दी रचना होने की सूचना मिलती है।[५]

फार्बस गु०सा०सभा, के ग्रंथ भंडार की हस्तलिखित पोथी संख्या ३४१ में " अमृत कला रमणी " नामक अप्रकाशित हिन्दी रचना संकलित है ।

---

१. अक्षय रस : भूमिका पृ०३

२. अखानी वाणी, सं०२००६, पृ०२३०, २१८, २२१

३. बृ०का०दोहन भाग ३ पृ०

४. अखो - एक अध्ययन : पृ०४३

५. हस्तलिखित ग्रंथोनी संकलित यादी : संपा०के०का०शास्त्री, पृ०२५

अखा साहित्य के अध्येता एवं संग्राहक श्री हरिदासभाई उदेशी मुंबई के पास से अखा की अप्रकाशित गुजराती रचना ै तिथि ै प्राप्त हुई है तथा हिन्दी के २० और गुजराती के ४० अप्रकाशित पदों की सूचना मिली है।

फार्बस गु०सा०सभा की हस्तलिखित पोथी संख्या २६३, ३३१, ३४० और २४५ में अखा की कुल मिलाकर १८५१ साखियाँ है जो १२५ अंगों में विभाजित है।

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों द्वारा सूचित रचनाओं को भाषा की दृष्टि से [अ] गुजराती और [आ] हिन्दी - दो भागों में प्रस्तुत किया जा सकता है।

गुजराती रचनायें:

[१] अखे गीता, [२] अनुभवबिंदु, [३] चित्र विचार संवाद, [४] गुरु शिष्य संवाद, [५] पंचीकरण, [६] अवस्था निरूपण, [७] कैवल्य गीता, [८] कल्याण गीता, [९] संतनां लक्षण, [१०] सातवार, [११] बारह मासा, [१२] कक्का, [१३] पद, [१४] छप्पा, [१५] विष्णुपद, [१६] दुहा- परजीआ, [१७] सोरठा, [१८] परमपद प्राप्ति [१९] पंचदशी तात्पर्य, । २० । सिद्धांत शिरोमणि, [२१] चतुःश्लोकी भागवत, [२२] जीवन्मुक्ति हुलास, [२३] साखियाँ, [२४] सिद्धांत-बिंदु, [२५] धुआर्य, [२६] तिथि, [२७] पत्र और [२८] आरती।

हिन्दी

[१] संतप्रिया, [२] ब्रह्मलीला, [३] कुंडलिया, [४] झूलना, [५] भजन, [६] जकड़ी, [७] एकलक्षरमणी, [८] अमृतकला रमैणी,

[६] पद, [१०] धुआसा, [११] साखियाँ, [१२] कायाशोध, [१३] अवस्था निरूपण, [१४] पंचदशी तात्पर्य ।

उपर्युक्त रचनाओं में केवल " चतु:श्लोकीभागवत " कवि की 'गद्य' कृति है । शेष काव्य कृतिओं को सुगमता की दृष्टि से इस प्रकार निर्दिष्ट किया जा सकता है--

रचनायें

- अनुपलब्ध
  - १. पंचदशीतात्पर्य
  - २. परमपदप्राप्ति
  - ३. सिद्धांतबिंदु
  - ४. कल्याणगीता
  - ५. केवलगीता
- उपलब्ध
  - प्रकाशित
    - प्रामाणिक
      - १. अखेगीता
      - २. अनुभवबिंदु
      - ३. चित्तविचारसंवाद
      - ४. गुरु शिष्यसंवाद
      - ५. संतप्रिया
      - ६. ब्रह्मलीला
      - ७. पंचीकरण
      - ८. अवस्था निरूपण
      - ९. संतनां लक्षण
      - १०. जीवन्मुक्तिहुल्लास
      - ११. कक्का
      - १२. वार
      - १३. तिथि
      - १४. मासा
      - १५. सिद्धांतशिरोमणि
      - १६. पत्र
      - १७. आरती
      - १८. भजन
      - १९. पद
      - २०. जकड़ी
      - २१. कुंडलिया
      - २२. झूलना
      - २३. साखियाँ
      - २४. छप्पा
    - भ्रामक
      - १. धुआसा धुआर्य
      - २. दुहा-सोरठा-परजीआ
      - ३. अवस्था-निरूपण
  - अप्रकाशित
    - प्रामाणिक
      - १. अमृतकला-रमैणी
      - २. तिथि
      - ३. चतु:श्लोकीभागवत
      - ४. विष्णुपद
    - भ्रामक
      - १. काया-शोध

सूचित रचनाओं की संदिग्धता - असंदिग्धता का निर्णय करने के प्रयोजन से पहले अनुपलब्ध एवं भ्रामक रचनाओं पर क्रमश: विचार किया जाएगा ।

अ. अनुपलब्ध रचनायें :

पंचदशी तात्पर्य और परमपद प्राप्ति

डॉ०के०एम०मुंशी ने " पंचदशी तात्पर्य " को अखा कृत हिन्दी कृतियों में गिना है जब कि डॉ०झवेरी ने उसे गुजराती रचना बताया है । दोनों में से एक भी रचना उपलब्ध नहीं हुई है ।

" कल्याण गीता और केवल गीता "

संभव है " कल्याणगीता " और " केवल्यगीता " तथा पूजारा कानजी को प्राप्त " केवल गीता " - तीनों एक भी हों । प्रतिलिपिकार की गलती या उसकी लिखावट की अस्पष्टता के कारण तीनों को अलग अलग मानने का भ्रम हुआ हो । " कल्याण गीता " और " केवल गीता " अनुपलब्ध हैं ।

सिद्धांत बिंदु

मधुसूदन सरस्वती [सं०१६१६ वि०में विद्यमान] और अखा [सं०१६३१-१७२५ वि०] एक दूसरे के समकालीन ही नहीं, दोनों अद्वैत मत के प्रबल पुरस्कर्ता होने के साथ साथ उच्च कोटि के भक्त भी थे । अत: संभव है कि अखा ने मधुसूदन सरस्वती के सिद्धांत बिंदु का अनुवाद भी किया हो । विभिन्न ग्रंथ भंडारों में हस्त लिखित पोथियों की छान बीन करने पर भी प्रस्तुत कृति अनुपलब्ध रही है ।

आ. भ्रामक रचनायें

भ्रामक रचनाओं को दो भागों में रखा जा सकता है - [१] स्वयं कवि कृत और [२] किसी अन्य कृत जो गलती से अखा के नाम चढ़ा दी गई है ।

धुआसा, धुआयँ और धमार

" अक्षय-रस " में यह बताया गया है कि " धुआसा " नामक अखाजी का हिन्दी ग्रंथ भी इस संग्रह में पहले पहल प्रकाशित हो रहा है। किंतु ये धुआसा, गु०व०सो०के ग्रंथ भंडार की हस्तलिखित पोथी संख्या ५७८ में प्राप्त " धमार " तथा श्री०के०का०शास्त्री जिसकी सूचना देते हैं वे " धुआयँ "[१] तीनों एक ही है। कृति के शीर्षक विषयक पाठभेद के कारण विद्वानों द्वारा भ्रम से इनको अलग अलग कृति के रूप में मान लिया गया है। वास्तव में एतद्-विषयक हस्तलिखित पोथियों में " धमार " के लिए धुमायँ, धुआयँ, धुआख्य। आदि रूप व्यवहृत हुए मिलते हैं। इन पाठांतरों में से "धुआख्या" को भ्रम से " धुआसा " पढ़ लिया गया है। अन्यथा " धुआसा " और " धमार " की रचनाओं में एक भी शब्द का अंतर नहीं है। स्पष्टीकरण के लिए यहाँ कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत की जा रही है :

अक्षयरस :

१. एन भयो हरि आप, अजब गति राम की हो ।। टेक ।।
भयो पंचतत्व तू प्यारे तू गुण इन्द्री माय ।।

ह०लि०पोथी :

एन भयो हरि आप न। अजब गत्य राम की हो ।। टेक ।।
भयो पंचतत्व तुं प्यारे ।। तुं गुण ईन्द्री माय ।।

---

१. कवि चरित : भा०१-२.पृ०५७०

२. अक्षयरस:

हे हरि हाज हजुर गुरूकी दृष्टे न्याहालीए हो ।। टेक ।।

अहं ममताकी ओट भयी है मिथ्या कोट बर जोर ।।

ह०लि०पोथी

हे हरि हाज हजूर ।। गुरुकी दृष्टे न्याहालीअे हो ।। टेक ।।

अहं ममता की ओट भयी है ।। मिथ्या कोट बर जोर ।।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि " घुआसा " और " घुआयीं " और कुछ न होकर " धमार " ही है।

कायाशोध :

के०का०शास्त्री ने डाहीलक्ष्मी लायब्रेरी, नडियाद, के ग्रंथ भंडार की हस्तलिखित पोथी संख्या डा, १०-२ में अखा की " काया-शोध " नामक हिन्दी रचना का होना बताया है[१]। नडियाद जाकर सूचित ह०लि०पोथी का विचारपूर्ण अध्ययन करने पर यह प्रतीत हुआ कि प्रस्तुत रचना ब्रह्मानंद [?] नामक किसी अन्य कवि कृत है और भ्रम से अखा के नाम चढ़ा दी गई है। निर्देशित ह०लि० पोथी के पृष्ठ १४३ पर कि जहाँ से " काया-शोध " प्रारंभ होता है, उसके बिलकुल एक पंक्ति ऊपर अखा के गुजराती पद की प्रस्तुत पंक्तियाँ है :

" केहे अखो अंत एणी पेरे आवे: ।। काल भालनो नमेडो:॥ तु ताहारी जात जाणे तो सारू: ।।५।। श्री गुरुभ्योननहीं सी स्वरस्वतीप्रशाद सीधा जलकुं सोधुं :।। थलकुं सोधुं :।। सोधुं अपनी काय:।। तीन लोक तो घट में सोधुं:।।

---

१. हस्तलिखित ग्रंथोनी संकलित यादी: संपा०के०का०शास्त्री पृ०२५

पाया आत्मबोध:।। ब्रम्ही ग्यान :।। "

जीर्ण कागज, बिखरी स्याही, अस्वच्छ एवं अस्पष्ट लिखावट आदि के कारण इस हस्तिलिखित पोथी में कौनसी रचना कहाँ से प्रारंभ होती है और कहाँ पूर्ण होती है इसका पता आसानी से नहीं चलता । अत: संभव है जहाँ से पद पूरा होकर नई कृति शुरू होती है वहाँ यह अंतर एकदम समझ में न आने के कारण यह भ्रम हुआ हो ।

उसके अतिरिक्त कृति के प्रारंभ, अंत या मध्य में कहीं भी " अखा " या " सोनारा " का संकेत तक नहीं है :

अंतिम भाग:

सब का मंजन लहे: ।। जलका मंजन पवन: ।। पवन का मंजन चैइतन ब्रह्म है: ।। अंजन किया मंजन किया सवा टांक :जीस: सवा टांक अम्रीत लेवी :।। मनुष चइतन ब्रह्मदेवजी: ।। गोदोडे अखर थया परम सम्पनस्ते: ।। स्मपुरण लखुं छे ।

मध्य भाग:

६०० जाप पुजा गणुसदेवजीकी अजाण चढावे तो कारी आवे:।। जाण चढावे तोत्रतफाल पावे: ।। पीतांवर वस्त्र: ।। गंध, धुप दीपपुश्परफल नवेद:।। अरपण: ।। गणेश देवजी नमस्ते :।।

उपर्युक्त उदाहरणों का विषय-वस्तु की दृष्टि से अध्ययन करने पर भी प्रस्तुत रचना अखा कृत नहीं प्रतीत होती । इसमें मनुष्य की देह में ही गणेश, सरस्वती, कालिका, अंबा, शंकर, विष्णु, ब्रह्म, हनुमान, भैरव आदि के निवास

की कल्पना कर उनके जाप जपने की विधि बताई गई है और यह उल्लेखनीय है कि अखा सिद्धांतत: बहुदेववाद विरुद्ध निर्गुण के ही उपासक-गायक थे ।

उपर्युक्त पंक्तियों को अखा की अन्य रचनाओं के अन्यत्र दिये गये उदाहरणों के साथ पढ़ने से यह भी स्पष्ट होता है कि शैली की दृष्टि से भी " काया-शोध " अखा की कृति नहीं है ।

सोरठा, दुहा और परजीआ दोहा

" राग हालारी दूहा " के नाम से २५३ " सोरठा " अखानी वाणी " में प्रकाशित हैं । गु०व०सो० के ग्रंथ भंडार की ह०लि०पोथी संख्या ६५, ५८१ और ७७३ के आरंभ और अंत में इन सोरठों को " सोरठा और हालारी दोहा " कहने के साथ साथ " दूहा परजीआ " और " परजीआ दोहा " भी कहा गया है । अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सोरठा और परजीआ दोहा एक दूसरें से स्वतंत्र न होकर एक ही कृति के भिन्न नाम हैं ।

फार्बस गु०स०के ग्रंथ की ह०लि०पोथी संख्या २६७ में उपलब्ध ६४ सोरठा प्रोफे०मधूसूदन त्रिवेदी ने फा०गु०स० त्रैमासिक जुलाई - सितम्बर ६५ के तृतीय अंक में प्रकाशित किये हैं । इस प्रकार प्रकाशित सोरठों की कुल संख्या ३५० के लगभग है । सभी सोरठे गुजराती भाषा में है तथा साखियाँ और छप्पा की भाँति इनमें संत समागम, आत्म- पहिचान, अहंता त्याग आदि अध्यात्मविषयक विचार व्यक्त किये गये हैं ।

अवस्था निरूपण :

आचार्य उमाशंकर जोशी ने इस लघु ग्रंथ को हिन्दी में निर्मित बताया है। जोशीजी से इस संबंध में पुछताछ करने पर उन्होंने डॉ०योगीन्द्र त्रिपाठी और अपने बीच की मौखिक बातचित को इस सूचना का आधार बताया।डॉ० योगीन्द्र त्रिपाठी के पास उपलब्ध एतद्विषायक ह०लि०पोथी की छानबीन की गई तो मालूम हुआ कि अवस्थानिरूपण गुजराती में ही है और भ्रम से इसे हिन्दी बताया गया है। फा०गु०सा०सभा के ग्रंथ भंडार की ह०ति०पोथी संख्या में जो " अवस्था निरूपण " है वह भी गुजराती में ही है। वास्तव में यह ग्रंथ गुजराती में है और सागर महाराज ने इसे प्रकाशित भी कर दिया है[१]। यह अवश्य है कि कवि की हिन्दी रचनाओं में इन चारों अवस्थाओं सांकेतिक और लाक्षणिक वर्णन[२] अवश्य मिलता है। शेष अप्रकाशित और प्रकाशित

---

१. अप्रसिद्ध अक्षयवाणी.पृ०७५ से ८०

२. जागृत अवस्था राम है, स्वप्न अवस्था जीव
अहंता निंद छांडी अखा तब जागृत राम सदैव ।।१२ ।।
आठुं पहोर ऐसा रहे कबहू नोहे ग्लान ।
जागृत में सुषुपति, अखा ! चारूं एक समान ।। १३ ।। परीक्षांग -साखी
अखा अवस्था भेद है ज्युं निंदु जागृत जाय
जागे ज्युं का त्युं ही है, त्युं समज्युं गेहेन गमाय ।।२।।
जागृत कहीं जाता नहीं, बाहेर तें निंद न आय
अखा अवस्था भेद है, जो साक्षीभूत रहाय ।।३ ।। हरि अंग- साखी ।।

- अक्षय रस ।

सभी रचनायें प्रामाणिक है क्योंकि सभी में स्थान स्थान पर कवि के नाम की छाप होने के साथ साथ विषय वस्तु की समानता और शैली का विकास स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

अप्रकाशित रचनायें

अगले पृष्ठों में प्रस्तुत किये जानेवाले अध्ययन में अप्रकाशित रचनायें भी सहायक होने के कारण इनका परिचय प्राप्त कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है। अप्रकाशित रचनाओं में " तिथि " " विष्णुपद ", और चतुर्थ-रचना " चतु:श्लोकी-भागवत " गुजराती में है और चतुर्थ रचना " अमृत कला रमेणी " हिन्दी में। यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय क्रमश: प्रस्तुत किया जाएगा।

तिथि[1]।

फार्बस गु०सा०सभा की ह०लि०पोथी संख्या १४६-२६७ -३२८-३३१ और ३५१ में उपलब्ध अखा की प्रस्तुत लघु रचना का अखा के अध्येताओं ने अपने ग्रंथों में उल्लेख नहीं किया है। " राग केदारा " में रचित प्रस्तुत कृति में मंगलाचरण नहीं है। अमावास्या तिथि से कृति का आरंभ कर उसका अंत सोलहवीं तिथि " पूर्णिमा " से किया है। गोरखनाथ कृत " पंद्रह तिथि " में भी प्रारंभ अमावास्या से कर सोलह तिथियों का वर्णन किया गया है[2]। प्रस्तुत रचना में चार चरणी चोपाई के सत्रह श्लोक हैं। फलश्रुति के सत्रहवें श्लोक में कृति और कवि नाम की छाया स्पष्ट है[3]।

---

१. देखिये : प्रस्तुत प्रबंध का परिशिष्ट

२. संत काव्य : परशुराम चतुर्वेदी, सं०२०१७ भूमिका पृ०३५

३. सोले तिथिनो करे विचार गुरुकी दृष्टे काहाढे पार।
हस्तामल ब्रह्मांडज थाय, अखा वस्तु रुप थई जाय।।

विष्णुपद

अखा की अप्रकाशित रचनाओं में " विष्णुपद ", गुजरात व०सो० अहमदाबाद के ग्रंथ भंडार की हस्तलिखित पोथी सं०द ५७८ में है। नरसिंह महेता, गोपाल, अनुभवानंद, रणछोड आदि कवियों के भी विष्णुपद मिलते हैं। नरसिंह, अखा और रणछोड के पद गुजराती में है जब कि अनुभवानंद और गोपाल के पद हिन्दी में हैं। इन विष्णुपदों की विशेषता यह है कि इनमें सगुण ब्रह्म का लीलागान न होकर, जैसा कि प्रस्तुत हस्तलिखित पोथी के प्रारंभ से ही लिखा है " श्री गणेशायनम: ॥ अथ विष्णुपद वेदांतनी परनालका-ना छे " वेदांत के अद्वैत ब्रह्म, ज्ञान, वैराग्य आदि का वर्णन किया गया है।

संत साहित्य में व्यवहृत प्रस्तुत " काव्य रूप " के मूल में सगुण ब्रह्म के गायकों के भक्ति पदों का प्रभाव हो सकता है। हिन्दी के सूरदास आदि कवियों में " विष्णुपद " नामक प्रयुक्त " छंद[1] " के साथ इन विष्णुपदों का कोई साम्य नहीं है।

चतु:श्लोकी भागवत[2]

प्रस्तुत रचना में " श्रीमद् भागवत " के सार रूप जो चार श्लोक[3] " चतु:श्लोकी भागवत " के नाम से पहचाने जाते हैं उनकी गुजराती गद्य में

---

१. सूरदास : ब्रजेश्वर वर्मा, सन् १९५०, पृ०५८२-५८३

२. दृष्टव्य : प्रस्तुत प्रबंध का परिशिष्ट

३. श्रीमद भागवत : द्वितीय स्कंध, नवम अध्याय, ३० से ३६

भावानुसारी सरल व्याख्या की गई है। विद्वानों और अखा के अध्येताओं का ध्यान प्रस्तुत कृति की ओर नहीं गया है। भाषा की दृष्टि से प्रस्तुत कृति का गद्य काफी परिष्कृत है। व्याख्या के बीच बीच में कवि ने संस्कृत वाक्यों का जो शब्दार्थ किया है उससे उनके संस्कृत भाषा साहित्य के ज्ञानी होने की सूचना मिलती है। कवि ने अपना नाम निर्देश प्रस्तुत गुजराती कृति के अंत में हिन्दी साखी में " सोना " अर्थात् अखा सोनारा शब्द द्वारा श्लिष्ट रूप से कर अपने काव्य कौशल का परिचय दिया है[१]। अखा की अन्य रचनाओं से भी उसके होने की सूचना ली जा सकती है[२]।

प्रस्तुत कृति डॉ० योगीन्द्र त्रिपाठी के हस्तलिखित पोथी संग्रह में सुरक्षित है। इसके आरंभ या अंत में उसका रचनाकाल या प्रतिलिपिकाल नहीं दिया गया है तथापि स्याही, लिखावट और कागज की जीर्णता को देखने से प्रस्तुत पोथी १०० वर्ष से अधिक पुरानी प्रतीत होती है।

अमृतकला रमैणी[३]

अखा की एक और लघुरचना फार्बस गु० सा० सभा की ह० लि० पोथी संख्या ३४६ में उपलब्ध है। विषय वस्तु और शैली की दृष्टि से प्रस्तुत कृति अखा की ही है[४]। कृति के अंत में कवि के नाम की स्पष्ट छाप दृष्टव्य है :

---

१. आदि सोना अंत सोना ।। मध्ये सोनम सोना ।।
   तीन घटकी रेंवेण जाणे ।। ताको पाप न पोना ।।

२. अ. अखे ते उरमां ग्रहे जे कही चतु:श्लोके । अखानी वाणी, पद ४०
   आ. सोच विचारी देखो संतो चतु:श्लोकी कहावे ।। "अक्षय रस", भजन २२

३. दृष्टव्य : प्रस्तुत प्रबंध का परिशिष्ट

४. विस्तृत अध्ययन के लिए दृष्टव्य : प्रस्तुत प्रबंध का चतुर्थ अध्याय ।

। ड । प्रकाशित रचनाओं का निर्माण काल

सभी प्रकाशित रचनाओं के निर्माण काल पर व्यवस्थित रूप से विचार करने के हेतु इन सब को बंध की दृष्टि से [१] प्रबंध काव्य [२] खंड काव्य और [३] मुक्तक काव्य के रूप में निर्दिष्ट किया गया है।

प्रकाशित रचनायें

प्रबंध काव्य	खंड काव्य	मुक्तक काव्य
१. अखेगीता	१. पंचीकरण	१. कुंडलिया
२. चित्तविचार संवाद	२. अवस्था निरूपण	२. झूलना
३. संतप्रिया	३. ब्रह्मलीला	३. जकड़ी
४. गुरूशिष्यसंवाद	४. अनुभव बिंदु	४. पद
	५. संतोनां लक्षण	५. भजन
	६. जीवन्मुक्ति हुलास	६. साखियाँ
	७. कक्का	७. धमार
	८. सात वार	८. पत्र
	९. बारह मासा	९. आरती
	१०. तिथि	१०. छप्पा
	११. एकलक्ष रमणी	
	१२. अमृतकला रमणी	
	१३. सिद्धांत शिरोमणि	
	१४. कैवल्य गीता	

उल्लिखित विभाजन में पहले मुक्तक और खंड काव्यों की चर्चा की जायेगी ।

मुक्तक और खंड काव्यों का रचना काल

उपर्युक्त उल्लिखित मुक्तक और खंड काव्य की रचनाओं में से किसी का भी रचना काल या रचना स्थान कवि ने नहीं बताया है, अत: इन सबके रचना काल पर सतर्कता से विचार करने की आवश्यकता है ।

अखा का जन्म समय निर्धारण करनेवाले अध्याय में कवि के सृजन काल की सीमा [सं.१६८३ वि.से सं.१७०५ वि.] के आसपास तक की स्वीकृत की गई है । इस समयावधि में अखा की सभी प्रबंध रचनाओं का सृजन हुआ लगता है । किंतु मुक्तक रचनाओं का निर्माण प्राय: कवि के मन की रुझान के अनुसार समय समय पर हुआ होने के कारण इनका रचनाकाल पच्चीस वर्षों से भी अधिक विस्तृत हो सकता है । तथापि 'अखेगीता' को कवि की अंतिम और सिद्धावस्था की कृति के रूप में स्वीकार कर उसकी पूर्ववर्ती और परवर्ती रचनाओं के रूप में इन कृतियों का निर्माण समय पर कुछ विचार किया जा सकता है ।

सातवार, बारह माहा, कक्का, तिथि, आरती, पद, कुंडलिया, झूलना, जकड़ी, कप्पा, साखियां आदि रचनाओ में से प्राय: एक या दूसरी करके सभी में विषय-वस्तु की दृष्टि से ज्ञान, भक्ति और योग की एकरूपता, हरि, गुरु,संत सेवा की महत्ता, हरि कृपा की प्राप्ति, गुरू-गोविंद में अद्वैत,

ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति में सद्गुरु की अनिवार्य आवश्यकता, अपनी आत्मा को ही सर्वस्व समझने का प्रबोध, परब्रह्म के साक्षात्कारजनित आनंद- मस्ती का उत्फुल्ल वर्णन, स्वरूप ब्रह्म का रसात्मक वर्णन आदि भावसाम्य के विपुल उदाहरण प्राप्त होने के कारण इन सबको एक दूसरे से बिलकुल निकट समय की कृतियाँ कहा जा सकता है।

विषय वस्तुगत साम्य के ये सभी उदाहरण 'अखेगीता' में यत्-किंचित् शाब्दिक परिवर्तन के साथ विपुल प्रमाण में उपलब्ध होनेके कारण इन सभी को अखेगीता के निर्माण काल सं०१७०५ वि०के आसपास में रचित कहा जा सकता है।

गुजराती मुक्तक और 'खंड' काव्यों का परिचय

उल्लिखित मुक्तक और खण्ड काव्यों में से किसी का भी रचनाकाल नहीं मिलने के कारण तथा सभी रचनायें लघु होने के कारण कवि की कृतियों का क्रम निश्चित करने में इनसे विशेष सहायता नहीं मिल सकती। तथापि कवि की अन्य रचनाओं को और उसके आध्यात्मिक विकास को अच्छी तरह से समझने में अतीव सहायक होने के कारण इन सबका परिचय प्राप्त कर लेना आवश्यक है। चूँकि इनमें से अप्रकाशित रचनाओं का परिचय पिछले पृष्ठो में दिया जा चुका है, यहाँ शेष गुजराती रचनाओं का परिचय प्रस्तुत है। हिन्दी रचनाओं का विस्तृत परिचय चतुर्थ अध्याय में दिया जायेगा।

पद और भजन

अखा के करीब १२६ गुजराती पद "अखानी वाणी" में छपे हैं। इसके अतिरिक्त ५० के लगभग और पद अप्रकाशित रूप में फार्बस सा०स०के ग्रंथ भंडार में संगृहीत है, उन अप्रकाशित पदों की सूची परिशिष्ट में दी गई है।

अखा के करीब ४५ गुजराती भजन अप्रसिद्ध अखायवाणी में छपे हैं। अखा के गुजराती पद, भजन और हिन्दी पद-भजनों में सिवा भाषा के विषय वस्तु और शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय अंतर नहीं है। हिन्दी पद - भजनों का परिचय चतुर्थ अध्याय में प्रस्तुत है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन गुजराती पद-भजनों के द्वारा कवि की अन्य रचनाओं को समझने में आसानी का अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न रूपकों के सुंदर प्रयोग के कारण इन रचनाओं का अखा-काव्य में विशेष महत्त्व है।

प्रभाती पद

उपर्युक्त सूचित ४५ भजनों में १८ भजनों को सागर महाराज ने "प्रभाती" बताया है। ~~प्रभाती भी मिले हुए हैं~~। सागर महाराज ने इन प्रभाती को काव्य रूप की दृष्टि से अलग नहीं छपवाया है। अपने प्रकाशित शोध-प्रबंध "मध्यकालीन साहित्य स्वरूपो" में डॉ०चंद्रकांत मेहता ने[१] गुजरात के ज्ञानमार्गी कवियों में से प्रभाती पद के रचयिताओं में केवल नरसिंह मेहता का ही उल्लेख किया है। अत: गुजरात के अन्य ज्ञानमार्गी कवियों द्वारा प्रस्तुत काव्य रूप की प्रयोग

---

१. मध्यकालीन साहित्य स्वरूपो : पृ०६६

परंपरा की दृष्टि से इन पदों का महत्त्व निर्विवाद है। यहाँ इन पदों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है। प्रभाती न तो किसी राग विशेष का नाम है न तो किसी छंद का। प्रभात में जो पद गाये जाते है उन्हें ही गुजराती में "प्रभातियां" और हिन्दी में "प्रभाती" कहते हैं।

ये प्रभाती प्राय: ज्ञान प्रधान, उपदेशप्रद तथा कृष्ण की बाल लीला विषयक होते हैं। नरसिंह मेहता इन तीनों प्रकार के प्रभाती पदों के लिये गुजरात में प्रसिद्ध हैं।

अखा ने अठारह प्रभाती पदों की रचना की है। अखा के इन पदों की विशेषता यह है कि इनमें ज्ञान, भक्ति और वैराग के उपदेश [२६, ३१, ३६, ४१, ४२, ४४], अद्वैत ब्रह्म वर्णन [२८, ३०, ३२, ३६, ४३], रागानुगा भक्ति [३५], ब्रह्मानंद की मस्ती [४६] के साथ साथ मधुर भाव वर्णन के भी पद [३७, ३८, ३६, ४०] मिलते हैं। नरसिंह मेहता से लेकर दयाराम तक के प्राय: सभी कृष्ण भक्ति कवियों ने राधा कृष्ण की केलि क्रीडाओं और स्थूल संभोग शृंगार और विप्रलंभ शृंगार का कहीं नग्न एवं अमर्यादित वर्णन किया है।

इन पदों में वर्णित "मधुर भक्ति" एवं "संभोग शृंगार" के आधार पर यह और स्पष्ट हो जाता है कि अखा पूर्वाश्रम में श्रीवल्लभाचार्य प्रचारित संप्रदाय के अनुयायी थे। परंतु कृष्ण भक्ति एवं राधा कृष्ण की केलि क्रीडाओं का वर्णन करनेवाले अन्य कवियों में और अखा में अंतर है। अखा ने संभोग, शृंगार के पारिभाषिक : सुरत, समर, केलि, मिथुन, उचेल अंगी, तथा मधुर

भक्ति के प्राणनाथ, वल्लभ, भरथार, मानिनी, मुखमान सुंदरी, मोहिनी आदि शब्दों का व्यवहार अवश्य किया है किन्तु इन शब्दों की भाव व्यंजना उनके अर्थ एवं संदर्भ मौलिक है। [रस रूप ब्रह्म [रसो वै सः] के वर्णनवाले नरसिंह और सूरदास के पदों में और अखा के एतद्विषयक पदों में जो स्पष्ट अंतर है उसका मुख्य कारण यह है कि अखा अद्वैत ज्ञाननिष्ठ और स्वानुभवी संत हैं। सुरत शृंगार के वर्णन में भी काम गंध शून्य निष्काम भक्ति का जो आस्वाद किया जा सकता है उसका रहस्य है अखा का मर्यादा-पुरुषोत्तम का-सा, धिरोदत्त नायक का गंभीर व्यक्तित्व ही।

इन प्रभाती पदों में उषा:काल, अरुणोदय, सूर्योदय, एवं सूर्यागमन के वर्णन, वेद और उपनिषदों में किये गये उषा और अरूणा, सूर्य और उडुगण आदि के वर्णनों का स्मरण कराते हैं। सूर्योदय के समय आकाश से लेकर पृथ्वी पर के ताल -तलैयों, वारिजों, भ्रमरों आदि के गतिपूर्ण एवं काव्यात्मक चित्रों में अखा का प्रकृति कवि के रूप का परिचय होता है। ~~अस~~

आरती

आचार्य डोलरराय मांकड यह बता कर कि "आरती" में देवगुणानुवाद होता है "आरती" का समावेश "कीर्तन" के अंतर्गत करते हैं[१]। जबकि डॉ०रामखेलावन पांडे, गोरखनाथ की आरती का उल्लेख कर आरती की अध्यात्मपरकता के कारण उन्हें भजन का एक विभेद बताते हैं[२]।

---

१. गुजराती काव्यप्रकाश : डोलरराय मांकड. १९६४ पृ० वही. पृ०२२२

२. हिन्दी साहित्यकोश : भजन : पृ०५३३

डॉ० चंद्रकांत मेहता ने " आरती " काव्य रूप की रचना करनेवाले गुजराती कवियों में केवल नरसिंह मेहता का उल्लेख कर अखा के परवर्ती कवि वल्लभ भट्ट, शिवानंद आदि द्वारा रचित आरतियों का उल्लेख किया है।[१] अखा ने भी " हरि गुरु संतनी आरती " लिखी है।[२] प्रस्तुत आरती में केवल बारह पंक्तियाँ है। इसमें अवर्णनीय एवं तुरियातीत " सदगुरु " के प्रति अपनी कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया गया गया है। गुजराती साहित्य में आरती काव्य की परंपरा में अखा के योगदान की दृष्टि के अतिरिक्त इसमें अखा के गुरु " ब्रह्मानंदस्वामी " का स्पष्ट निर्देश[३] होने के कारण भी अखा-काव्य में प्रस्तुत आरती का महत्त्व अक्षुण्ण है। अखा के " गुरु " वाले प्रश्न को सुलझाने में उन पंक्तियों का अतीव महत्त्व है।

पत्र

डॉ० चंद्रकान्त मेहता ने प्रस्तुत काव्य रूप को अपनानेवाले अखा के पूर्ववर्ती कवि नरसिंह मेहता को छोड़कर अन्य किसी जैनेतर संत-कवि का उल्लेख नहीं किया है[४]। गुजरात की ज्ञानमार्गी परंपरा में नरसिंह के परवर्ती संत कवियों

---

१. मध्यकालना साहित्य प्रकारो, पृ० १३६ से १३८

२. अखानी वाणी : पद १३०, पृ० २२१-२२

३. ब्रह्मानंद स्वामी अनुभव्या रे, जग भास्यो छे ब्रह्माकार
महानुभावे महेर करी, समजावी सर्वे रीत ।।
— वही, पृ० २२२

४. मध्यकालना साहित्य प्रकारो : पृ० १७१

में अखा ने इस रूप का प्रयोग किया है यह उल्लेखनीय है[१]। नरसिंह मेहता के काव्य में जो पत्र मिलता है वह मथुरा में स्थित श्री कृष्ण को गोपी द्वारा लिखित है[२]। अखा के परवर्ती संत कवियों में अखा की ही शिष्य परंपरा के संत कल्याणदासजी[३] और संत जीतामुनिनारायण ने[४] हिन्दी में पत्र लिखे हैं, इन दोनों के पत्र " काफर बोध " के नाम से प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त " निरांत संप्रदाय " के प्रवर्तक श्री निरांत महाराज द्वारा भी अपने गुरु को गुजराती में लिखा हुआ एक पत्र मिलता है[५]। स्वानुभूत अद्वैत ब्रह्म का वर्णन करनेवाले प्रस्तुत पत्र का अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि पाटण शहर के निवासी अपने किसी शिष्य को यह लिखा गया है। प्रस्तुत पत्र में केवल सत्रह पंक्तियाँ है।

छप्पा और साखियाँ

गुजरात में संत कवि अखा की विशेष प्रसिद्धि का मुख्य कारण उनके छप्पा है। स०सा०अहमदाबाद ने और उमाशंकर जोशी ने अखा के छप्पा का प्रकाशन किया है। उमाशंकर जोशी द्वारा प्रकाशित संस्करण अनेक ह०लि०

---

१. अखानी वाणी:पद-१२६. पृ०२१८

२. नरसिंह मेहता कृत काव्य संग्रह.पद १८१

३. संतोनी वाणी : वाणी विभाग, कल्याणदासजी

४. वही.वाणी विभाग, जीतामुनि नारायण

५. बृहद् काव्यदोहन,भाग ५.-निरांत कृत कविता.पृ०५६४

पोथियों की सहायता लेकर शास्त्रीय ढंग से संपादित किया गया है। उसमें ७५६ छप्पा ४५ अंगों में विभाजित है। जैसा कि गुजराती के सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है, अखा के ये " छप्पा " पिंगलशास्त्रीय छप्पा- छप्पय नहीं है जिसमें रोला और उल्लाला का योग रहता है। ये छप्पा तो ६ चरणी चौपाई है। इस प्रकार की षट्पदी चौपाई अथवा चौपाई के ६ चरणों के एकम [Unit] का प्रयोग अखा के पूर्ववर्ती कवि मांडण बंधारा ने किया है। हो सकता है इस छंद प्रयोग की प्रेरणा ~~अखा~~ अखा ने मांडण से ली भी हो।

अखा की मुद्रित रचनाओं में छप्पा के साथ उनकी साखियों का भी महत्त्व है। अखा के किसी अध्येता का लक्ष्य इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने की ओर नहीं गया है। यह कार्य करणीय है, यहाँ इसके प्रति अंगुलिनिर्देश किया जाता है। छप्पा और साखियाँ दोनों में माया, गुरू, कृपा, चेतना, खलज्ञानी, भक्ति, चातक, प्राप्ति विचार, विश्वरूप, वेष-विचार, विभ्रम, सहज आदि अंग मिलते हैं। दोनों में अपना अपना वैशिष्ट्य होते हुए कहीं कहीं बहुत कुछ साम्य[१] भी प्रतीत होता है। दोनों में पुनरुक्तियाँ

---

१. साखी: अपढ़ पढ़ा सब सारीवा जो ~~नाहीं~~ नाहीं आतम लक्ष

पादी के नितरी शिला अखा सरखी डुबन पक्ष ।।६।। सर्वांग-साखी

छप्पा: ज्यम शला एक टांकी चितरी अवडी बीजी मेले भरी

बेय नाखी ऊंडां जल विषे पण सरखे बेउ ए तरवा पखे

त्यम पंडित-मूर्ख सरखा निमहे अखा इतने रूपक चढे ।। ३६६।। छप्पा.

भी है। दोनों का रचनाकाल निश्चित नहीं है क्योंकि दोनों के सर्जनकालकी सीमा विस्तृत है। साखियों की अपेक्षा छप्पा में कवि के उपदेशक, बाह्याचारों

साखी: न्याय कर जाने नर नमे और राग रंग के जाण

आत्मज्ञान बिना अखा, सब गुण कठे पहाण ।। ६ ।।

– चेतना अंग, साखी.

छप्पा: घणुं पंडित डाह्या गुणवान, न्याय पारखुं संगीत ~~गान~~ गान

अष्टावधानी पिंगळ कवि, मंत्र भेद औषध अनुभवी

अखा एटले जो नव खटयो, तो मोळपणा थो आघो शुं वह्यो ।। ३६८

साखी: आलम तें उलटा चले अनुभवी पुरूष असंग

ज्युं पड़त प्रतिबिंब नीरमें अखा आकास विहंग ।। ६ ।।

छप्पा: वात अलौकिक अनुभव तणी, प्रपंच पारे रहेण आपणी

ज्यम पंखी ओछायो पडियो जाळ, पण पोते उडे निलग निराळ

अखा ज्ञानीनी एवी कला, वर्त्यो जाय उपरछला ।। १४८ ।।

गुजराती साखी:

ज्यम भिक्षुक भिक्षा करे एकठी, कहीं अळगो बेसी खाय

अन्ननी गंघि श्वान त्यहां पछू हलावतो जाय ।। १२ ।।

जप तप करे दमे देहने मान वहे धर्मध्यान

त्यहां धन तनना अर्थी घणा टींगलाये संसारी श्वान ।। १३ ।।

देव आगळ दु:ख दाखवे, पहोर एकांते जाय

उसकां भरतो दु:ख कहे, न बोले न प्राप्त थाय ।। १५ ।।

के कटु विवेचक एवं मिथ्याडंबरों के तीव्र खंडनकर्ता आदि रूपों का परिचय होता है किंतु भाषा की समाहार एवं समास शक्ति का परिचय साखियों में विशेष रूप से होता है। यहाँ अखा की हिन्दी और गुजराती साखियाँ तथा छप्पा के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं।

दहेरा पाछळ भींतने, भरतो दीसे बाथ

घूळ चाटे पहलो चोपडे, म्होंमां घाले हाथ ।। १६ ।।

एम आशा वगुवे विश्वने, नद, सुद, चौदे लोक

ज्यम दडो दोटावे नर, अखा ! क्षण क्षणे हर्ष शोक ।। १७ ।।

करमां वांकी कोथळी ! करतो दीसे जाप ।

अंतर आराधन प्रेतनुं ! स्वामी ! मुने सिध्धि आप ।। १८ ।।

तृष्णा तरणी नित्य नवी, विध विध वांछे विलास

पग पसारी ते सुवे अखा ! जे कापे आश ।। २० ।। आशा अंग ।

नैराशी एम जाणवो, जेम देवमां शालिग्राम

पण प्रतिष्ठा पूज्य छे, एम नैराशी पूरणधाम ।। ६ ।।

नैराशी नीपज अखा ! जेम अनलनुं अंड

वणफूटे अधोगति दटी, चेतन उर्ध्व ब्रह्मांड ।। १० ।।

नैराशी नरने अखा ! नोहे त्रिगुणनुं जाल

ज्यम सहज कमर सरिता पडे [पण] नीर एम पाताल ।। ११ ।।

नैराशी नरनुं अखा ! मूलगे आव्युं मन

ज्यम शरद ऋतु शशी शोभिये, धांघ टळयुं गगन ।। १२ ।।

– नैराशी अंग, अक्षयरस.

जीवन्मुक्ति हुलास

" जीवन्मुक्ति हुलास " अखा की एक महत्त्वपूर्ण मुक्तक रचना है। " अखानी वाणी " में संकलित गुजराती पदों के साथ प्रस्तुत रचना पद संख्या १४२ के रूप में है। गुजराती के किसी विद्वान ने इसका स्वतंत्र कृति के रूप में उल्लेख नहीं किया है। प्रथम पंक्ति में ही गुरु वंदना के साथ साथ कृति का नामाभिधान स्पष्ट है :

सतगुरु चरणे जई नमुं कहुं जीवन्मुक्ति हुलास।

निरूपित विषय के अध्ययन से प्रतीत होता है कि प्रस्तुत कृति कवि की सहजावस्था उपलब्धि के पश्चात् रचित है। कवि का मत है कि जीवन्मुक्त संत पंचकोशों से ऊपर और तीन अवस्थाओं से परे होकर साक्षी रूप से सोऽहं-पद में निवास करता है। यह सोऽहंपद वर्णनातीत है। रवि, शशि, तारा तथा काल तक को इसकी पहचान नहीं होती है। गुरुगम और ब्रह्मज्ञान से ही इसका अनुभव किया जा सकता है।

फलश्रुति में कवि का कथन है कि जीवन्मुक्ति हुलास को हृदय में धारण करने पर जीवन्मुक्तावस्था की प्राप्ति होती है। कवि के नाम की भी यहाँ देखी जा सकती है :

जीवन्मुक्त हुलासने कोई धारे हृदिया मांय
कहे अखो अविगत कथा तेने जीवन्मुक्ति थाय।

प्रस्तुत रचना चोपाई के चार चार चरणों में रचित कवि की सरलतम

लघु कृति है ।

सिद्धांत शिरोमणि

प्रस्तुत रचना की सूचना सागर महाराज के पुत्र डॉ०योगीन्द्र त्रिपाठी के पास से मिली है । " अखानी वाणि " में संकलित पद संख्या १२१ की अंतिम पंक्तियों को डॉ० त्रिपाठी अखा की स्वतंत्र लघु कृति " सिद्धांत शिरोमणि के नाम से अभिहित करते हैं । सागर महाराज को प्रस्तुत रचना की ह०लि० पोथी कहानवा आश्रम से मिली थी और इस समय वह डॉ०योगीन्द्र त्रिपाठी के पास सुरक्षित है । पद के तथोक्त शीर्षक को ध्यान में रख कर उसका आद्यंत अध्ययन करने पर यह प्रतीत होता है कि उसमें आदि, मध्य और अंत में रचना के शीर्षक की व्यंजना तक नहीं हुई है ।

अत: प्रस्तुत रचना को स्वतंत्र लघु ग्रंथ कहने की अपेक्षा इसे अन्य पदों की तरह एक पद रूप में स्वीकार करना ही अधिक उचित प्रतीत होता है ।

बारह मासा

बारह मासा काव्य प्राय: दो प्रकार के होते हैं - विप्रलंभ शृंगार रस प्रधान एवं ब्रह्म रस-ज्ञान प्रधान । जैन एवं वैष्णव धर्म के गायकों के अनुकरण पर गुजरात के ज्ञान मार्गीय कवियों ने ऐसे उपदेश प्रधान मासा काव्यों की रचना की है ।

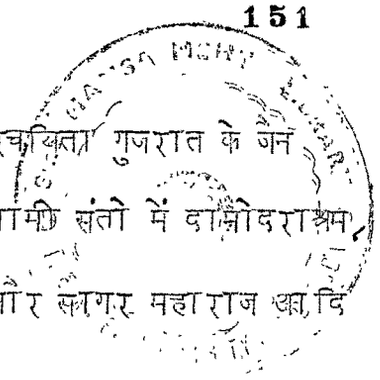

डॉ॰ मजमुदार का मत है कि ज्ञान मास के रचयिता गुजरात के जैन और जैनेतर कवियों में संत अखा प्रथम है। इनके अनुगामी संतो में दामोदराश्रम, दयाल, प्रीतम, बापुसाहब गायकवाड, भोजा भगत और सागर महाराज आदि के ज्ञान मास उपलब्ध है।

प्रस्तुत कृति की विशेषता यह है कि इसमें मंगलाचरण नहीं है। प्रारंभ से ही कवि विषय वस्तु के निरूपण का उपक्रम करता है। इस उपक्रम में कृति का नामकरण व्यंग्य है।

फलश्रुति में कवि कहता है कि जो मुमुक्षु इस "मास" को सुनेंगे और जीवन में अनुभव करेंगे उन्हें प्रत्यक्ष राम की पहचान होगी और वे तद्रूप हो जायेंगे। कवि यह भी कहते हैं कि जो सदगुरु के बालक अर्थात् गुरुमुखी ज्ञानी होंगे वे ही इसे गा सकेंगे।

कवि ने विक्रम संवत्सर का अनुसरण कर कृति का प्रारंभ कार्तिक मास से किया है। उसके पश्चात् क्रमश: मार्गशीर्ष, पोष, महा, फाल्गुण, चित्र [चैत्र] वैशाख, जेठ, आखाड, श्रावण, भाद्र, आसो आदि सभी को ग्रहण किया है।

कवि ने प्रत्येक मास के श्लिष्ट उच्चारण की योजना कर वाच्यार्थ की अपेक्षा लक्ष्यार्थ पर विशेष बल दिया है :

१. कारि तके तुं चेते नहीं जीवडा, नित्य अवसर एहवो नहींज आवे।

२. पोषतुं तुजने महा ब्रह्मरस वडे, जो जडे हाथ तुंने वारन्तीता।

३. महाजन जाण रे हाण नित्ये होये, काल करवत त्हारुं आयु कापे ।

४. फाल माहि गुण छे घणा, जीवडा फाल बोले तेहने काढ शोधी ।

५. आ सोऽहं प्रमाण प्रत्यक्ष एम जेहने, श्रुति स्तवी कहे जे परपंच पार ।

शब्दों के इस प्रकार के श्लिष्ट प्रयोगों के द्वारा कवि ने गंभीर तत्व-ज्ञान का अति सरलता से निरूपण किया है । प्रस्तुत कृति की ह०लि०पोथी सं०४ डॉ०योगीन्द्र त्रिपाठी के पास सुरक्षित है ।

सातवार

प्रस्तुत कृति में मंगलाचरण नहीं है । शब्दों के श्लिष्ट प्रयोगद्वारा अभिव्यक्ति को चमत्कारिक बनाने की जो रीति " वारह मासा " में अपनाई गई है वह यहाँ भी दृष्टिगोचर होती है । प्रथम पंक्ति में ही " आ वार "[१] शब्द प्रयोग द्वारा [१] इसी समय और [२] सातवार [प्रस्तुत कृति] की अभिव्यंजना है । क्षेम शुक्र[२], सोम[३], आदि में भी ऐसा ही श्लिष्ट अर्थ अभिप्रेत है ।

प्रस्तुत रचना का प्रारंभ गुरुवार[४] से कर संत अखा ने अपनी गुरुभक्ति का परिचय दिया है ।

---

१. आ वार ओलखो रे आत्मा तम मांहो ।

२. शुक्र पितानुं दिवस सकलनु गुण अनारथ जेम ।

३. " सो मै " जाण्यो बोलणहारो जे परात्पर परब्रह्म ।

४. पहले सदगुरु सेवरे प्राणी जो अवसर मल्यो आ वार,

कृपा करीने कल आपे गुरु तेणे सघ टले संसार ।

— अप्रसिद्ध अक्षयवाणी पृ०५

औठ हाथ[१] के शरीर में रही आत्मा को प्राप्त करने के लिए एकमेव अद्वैत[२] का अभ्यास और " हरि गुरु संत सेवा " का बोध देकर कवि ने स्वानुभव प्राप्ति को सब से महत्त्वपूर्ण आप्य बताया है ।

शैली की दृष्टि से यह कृति "वार" एवं "बारह मास" की भाँति प्रवाहपूर्ण सरल, एवं उपदेशक है ।

"राग मारु" में निर्मित प्रस्तुत कृति में चार चरणी चौपाई के पूरे आठ पद हैं । इस कृति की ह०लि०पोथी सं०४ डॉ०त्रिपाठी के पास सुरक्षित है ।

कक्का

कक्का सर्व प्रथम मध्यकालीन गुजरात के जैन कवियों की रचनाओं में उपलब्ध होते हैं । श्री०चिमनलाल दलाल ने चौदहवीं सदी के ऐसे चार " मातृका-कक्का " काव्यों का परिचय दिया है । मातृका और कक्का दोनों वर्णाक्षरों के आधार पर ही रचित होते हैं । किंतु मातृका में जहाँ " अ " से आरंभ होता है वहाँ कक्का में " क " से[३] ।

डॉ०प्रो०मंजुलाल मजमुंदार ने कवियो में अखा भगत को गुजरात का प्रथम कक्का लेखक बताया[४] है । किंतु आचार्य अनंतराय रावल कृत उल्लेख के

---

१. ओठ हाथमां रहो रे जेने नेति नेति श्रुति गाय ।

२. एकमेव अद्वैत ज आपे ।

३. गुजराती साहित्यनां पद्य स्वरूपो [मध्यकाल] पृ०४६६

४. वही, पृ०४६६

आधार पर अजैन कवियों में अखा के पुरोगामी पौराणिक कवि नाकर [सं० १५७२-१६२४] को गुजरात का प्रथम कक्का लेखक कहा जा सकता है[१]। परंतु एतद् संबंधी उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करनेपर यह अवश्य कहा जा सकता है कि ज्ञान मार्गीय कवियों में अखा ही गुजरात का प्रथम " ज्ञान - कक्का " का लेखक है। प्रस्तुत " ज्ञान- कक्का " की ह० लि० पोथी सं० ४ डॉ० त्रिपाठी के पास सुरक्षित है।

अखा के इस ज्ञान - कक्का का अनुसंधान " अक्षमालोपनिषद " के साथ जोड़ा जा सकता है। अक्षमालोपनिषद् में सोलह स्वरों तथा क से ह और क्ष तक के व्यंजनों का निरूपण है। अखा ने क, ख, ग, घ, न [ङ] च, छ, ज, झ, न। । ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, भ, ज [य] र, ल, व, श, ख [ष] स, ह, ख [क्ष] आदि व्यंजनों को ग्रहण कर अड़तीस श्लोकों की रचना की है। अखा ने ही प्रस्तुत रचना का मंगल प्रारंभ किया है। "ओंम नमो परमात्मा जे आद्य निरंजन देव "। प्रस्तुत कृति का "कक्का" नामकरण स्वयं अखा के द्वारा हुआ है :

अगोचर गोचर थवानि कहुं कक्कानो भेद।

फलश्रुतिमें कविका कहना है कि जो मुमुक्षु कक्का के महिमा को समझेगा वह परब्रह्म पद में वास करेगा।

" कक्का ए पुरण थया, साई ! शिखे सुणे जे गाय

परब्रह्म पदे त्यां ते वसे, प्रीछे जे महिमाय।

---

१. गुजराती साहित्य [मध्यकालीन] पृ० ४१

प्रस्तुत कृति में स्वयं कवि ने प्रतिपाद्य विषय का भी उल्लेख किया है :

एमां ज्ञान, भक्ति वैराग्य छे, मांहि गुरु शुश्रुषा भेद ।

रचना क्रम

प्रो॰ गजेन्द्र पंड्या कृत "अखानां काव्योनी आनुपूर्वी"[1] और आचार्य उमाशंकर जोशी कृत प्रस्तुत एतद्विषयक अध्ययन[2] अखा की रचनाओं के क्रम निर्धारण की दिशा में अंगुली निर्देश अवश्य कर सकते हैं। दोनों द्वारा सूचित क्रम इस प्रकार है :

प्रो॰ गजेन्द्र पंड्या	आचार्य उमाशंकर जोशी
पंचीकरण	अवस्था निरूपण
कैवल्यगीता	पंचीकरण
चित्तविचार संवाद	गुरु शिष्य संवाद [सं॰ १७०१ वि॰
गुरु शिष्य संवाद	संतप्रिया
पंतप्रिया	चित्त विचार संवाद
ब्रह्मलीला	ब्रह्मलीला
अनुभव बिंदु	अनुभव बिंदु
अखेगीता [सं॰ १७०५ वि॰]	अखेगीता [सं॰ १७०५ वि॰]

यद्यपि दोनों विद्वानों ने अखेगीता को कवि की अंतिम और उत्तम कृति

---

१. साहित्यकार अखो : पृ॰ ११६ से १३०

२. अखो - एक अध्ययन : पृ॰ १४५ से १८०

के रूप में स्वीकार किया है तथा अनुभवबिंदु को अलगिता के बिलकुल निकट पूर्व की रचना बताया है तथापि सूचित क्रम में भिन्नता होने के कारण, उसमें कई रचनाओं के छूट जाने के कारण तथा संतप्रिया के दूसरे प्रकरण के प्राप्त होने के कारण और संतप्रिया तथा ब्रह्मलीला के गहरे अध्ययन के परिणाम स्वरूप सूचित क्रम पर पुनर्विचारणा करना अनिवार्य-सा प्रतीत होता है।

प्रस्तुत प्रश्न पर विचार करने के लिए कवि की समस्त रचनाओं का अध्ययन कर निम्नलिखित आधार - लक्षण निर्धारित किये गये हैं :

१. मंगलाचरण

२. फलश्रुति

३. विषय वस्तु का विकास

४. पारिभाषिकता से सरलता की ओर गमन

५. श्रवण, पठन, मनन एवं चिंतन से स्वानुभूति की ओर गतिमानता

६. काव्यात्मकता का विकास

७. भाषा की उत्तरोत्तर परिपक्वता

८. शैली की प्रौढ़ता

संतनां लक्षण अथवा कृष्ण उद्धव संवाद

प्रस्तुत कृति सर्व प्रथम 'अखो - एक अध्ययन' में प्रकाशित हुई[१]। इसके पूर्व प्रस्तुत कृति का उल्लेख अन्य किसी विद्वान ने नहीं किया था। इसके

---

१. अखो- एक अध्ययन : पृ०१७८-१८०

१३ वें श्लोक में " पंचीकरण " और १४ वें श्लोक में " गुरु शिष्य संवाद " का संकेत होने के कारण इसे पंचीकरण और गुरु शिष्य संवाद के पूर्व की रचना कहा जा सकता है[१]। इसके अतिरिक्त इसकी भाषा, पंचीकरण और अवस्था-निरूपण की भाषा की तुलना में कुछ शिथिल-सी होने के कारण इसे उपलब्ध रचनाओं में कवि के सर्जन काल की प्रारंभिक दशा की सर्व प्रथम सलंग रचना भी कहा जा सकता है।

ग्रंथ का नामकरण स्वयं कवि द्वारा हुआ है[२]। इसमें रचयिता का नामोल्लेख श्लिष्ट है। श्रीकृष्ण इस कृति में वक्ता है और उद्धव श्रोता। कृति के अंत एवं फलश्रुति के रूप में श्रीकृष्ण, संसार से पार होकर "निजपद" की प्राप्ति के हेतु इन लक्षणों का आचरण करने का प्रबोध करते हैं।

प्रस्तुत रचना में संत के करीब करीब, सतावन लक्षणों का निरूपण किया गया है। हो सकता है प्रस्तुत काव्य की प्रेरणा, अखा को, "भागवत" में उपलब्ध "कृष्ण-उद्धव संवाद" से मिली हो। यह भी हो सकता है कि इस काव्य की रचना के पूर्व अखा अपने समकालीन कवि नरहरि कृत " गोपी उद्धव संवाद " से भी परिचित हो चुका हो। प्रस्तुत ग्रंथ की संवाद-काव्य-शैली का उत्तरोत्तर विकास " चित्तविचार संवाद " और " गुरु शिष्य संवाद " में देखा जा सकता है। शैली शुद्ध प्रमुखम्मत, उपदेशप्रधान एवं अत्यंत सरल है। इसमें चार चरणी चोपाई के बत्तीस श्लोक हैं।

---

१. अखो - एक अध्ययन, पृ.१८०

२. कृष्ण उद्धवनो ए संवाद, अणोपद पाम्युं उहुलाद,
जो इछो निजपद पामवा, तो छिंडो लक्षण साधवा ।। ३२ ।।

पंचीकरण

प्रस्तुत कृति में जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुर्या- चारों अवस्थाओं का उल्लेख[१] होने के कारण इसकी तुलना अवस्थानिरूपण के साथ करने से प्रतीत होता है कि प्रस्तुत रचना कवि के सिद्धांत - शास्त्रज्ञान का निरूपण करनेवाली सामान्य कोटि की कृति है जबकि " अवस्था निरूपण " में कवि की " अनुभव दशा " का आविष्कार हुआ है। अत: इसे " अवस्था निरूपण " के पूर्व की रचना कहना युक्तिसंगत लगता है।

जैसा कि इसके नाम से ही सूचित होता है इसमें वेदांतानुरूप पंचीकरण प्रक्रिया का अनुकरण कर कवि ने शंकराचार्य प्रतिपादित " मायासंयुक्त केवलाद्वैत " का वर्णन किया है। विषय-वस्तुगत पारिभाषिक शब्दावली के बहुल व्यवहार के कारण प्रस्तुत रचना सामान्यजनगम्य कहीं हो पाई है, तथापि इसमें प्रयुक्त " अर्णव-लहर, " " पर्वत पर वर्षा, " शरद ऋतु " आदि के दृष्टांतों का " गुरु शिष्यसंवाद " " चित्तविचारसंवाद ", अनुभवबिंदु ", ब्रह्मलीला " आदि कृतियों में उत्तरोत्तर विकास हुआ देखा जा सकता है।

मंगलाचरण एवं फलश्रुतिरहित शुद्ध प्रमुखसम्मत शैली में रचित प्रस्तुत कृति में चार चरणी चौपाई के १०२ श्लोक हैं। यह रचना " अखानी वाणी " में तथा अखाकृत काव्यो-भाग एक " में प्रकाशित है।

---

१. " ..... अवस्था चार, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति व्यापार,
तुर्यनि मळे ज्यारे जीव टळे ।४५। अखो-एक अध्ययन, पृ० १७७
तथा ८३ से ८८ तक के श्लोक दृष्टव्य है।

अवस्था निरूपण

अखा के पूर्ववर्ती और परवर्ती गुजरात के ज्ञानी कवियों की उपलब्ध रचनाओं की छानबीन करने पर विदित होता है कि अखा ही सर्व प्रथम ऐसे संत हैं जिन्होंने एक स्वतंत्र कृति के रूपमें इस गंभीर एवं गहन विषय का सरल रीति से निरूपण किया है। इसमें जीवात्मा की जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरियावस्थाओं का क्रमश: "शरीरावस्था", "अज्ञानावस्था", "जीव ईश्वर भेद ज्ञान" और "कैवल्यज्ञान" के शीर्षकों से वर्णन किया गया है। इस अवस्थानिरूपण के के बीज " मांडूक्योपनिषद " में वर्णित ब्रह्म के चार पाद वाले वर्णन में पाये जा सकते हैं। गौडपादाचार्य ने अपनी मांडूक्य कारिकाओं के प्रथम आगम प्रकरण में इन अवस्थाओं का जो विश्लेषण किया है, अखा ने उसीका अनुसरण किया है।

प्रस्तुत रचना " अप्रसिद्ध अक्षयवाणी " में प्रकाशित है।

गुरु शिष्य संवाद, चित्त विचार संवाद और संतप्रिया

उपर्युक्त तीनों कृतियों में मंगलाचरण की अस्पष्टता, सद्गुरु प्रशंसा, परब्रह्म वर्णन, अद्वैत ज्ञान निरूपण, स्वानुभव की महत्ता कथन, निजानंद की मस्ती आदि वर्ण्य विषयगत साम्य होने के कारण ये तीनों कृतियां समय की दृष्टि से एक दूसरे के निकट आसपास और गुरु ब्रह्मानंदस्वामी के मिलन एवं सान्निध्य के पश्चात् रचित हुई प्रतीत होती है। जैसा कि प्रथम अध्याय में अखा और स्वामी ब्रह्मानंद की भेंट का समय १६८०-८१ के आसपास स्वीकृत किया गया है और गुरु शिष्य संवाद का रचना संवत १७०१[१] वि० मिलता है, इन

---

१. संवत १६०१ सतर प्रथमे हवो ग्रंथनो उत्पन्न ।।
जयेष्ठ मासे कृष्ण पक्षे, नवमि सोमवासर दीन्न ।। फा० गु० सा० ह० लि० पो० ३३१ और ३३६

तीनों का निर्माण काल सं० १६८२ के पश्चात् से लेकर सं० १७०१ वि० के आसपास का स्वीकार किया जा सकता है।

गुरु और शिष्य के संवाद रूप में रचित होने के कारण तथा हस्त-लिखित पोथियों में " अथ गुरु शिष्य संवाद लिख्यते " मिलने के कारण प्रस्तुत ग्रंथ " गुरु शिष्य संवाद " के नाम से प्रसिद्ध है अन्यथा स्वयं कवि ने उसे " गुरु शिष्य ग्रंथ "[१] कहा है। इसमें चार खंड है। प्रथम खंड में पंचभूत - भेद, द्वितीय में ज्ञान निर्वेद योग और चतुर्थ में तत्वज्ञान निरूपण है। मुमुक्षु-लक्षण वर्णनवाले तृतीय खंड में " पंचीकरण ना जाणे संच " तथा "संत तणा लक्षण सुन तात " के उल्लेखों से कवि द्वारा रचित " पंचीकरण " तथा "संतनां लक्षणो " नामक रचनाओं के संकेत लिए जा सकते हैं। इन तीनों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि "संतनां लक्षणो" और "पंचीकरण" -दोनों रचनायें अखा को गुरू ब्रह्मानंद की भेंट होने के पहले की है। गुरु शिष्य संवाद आदि कृतियों की तुलना में इन दोनों कृतियों में भाषा शैथिल्य एवं पारिभाषिकता की अधिकता है। गुरु शिष्य संवाद में कवि की शैलीगत परिष्कृति एवं अनुभव दशा की विशेष प्रतीति होती है।

गुरु शिष्य संवाद के खंडों में अपने कथितव्य को पुष्ट एवं समर्थित करने के लिए कवि ने यथास्थान 'दत्तगीता', महाभारत के 'शांति पर्व' का 'नारायण खंड', 'विवेक चुडामणि', 'शांकर भाष्य', 'उपदेश साहस्री' 'भागवत', 'भगवद्गीता' आदि संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों के संदर्भ दिये हैं। इसके अतिरिक्त वेदांत के 'अर्कीकिरण', 'खपुष्प', 'वंध्यासुत', 'पारसलोहास्पर्श', 'अर्णव लहर' आदि

---

१. गुरु शिष्य नामे ग्रंथ जेमां खंड छे चार ।। ४

– अखानी वाणी. पृ०

पारिभाषिक तथा संस्कृत तत्सम और तद्भव शब्द-प्रयोग बाहुल्य से प्रस्तुत ग्रंथ सामान्यजनगम्य नहीं हो पाया है तथापि कवि ने परिचित दृष्टांतों, उपमाओं और पूर्व प्रयुक्त संवाद शैली के सुष्ठु प्रयोग के द्वारा इसे आस्वाद्य बनाने का प्रयत्न किया है।

चित्तविचारसंवाद में चार चरणी १०४ चौपाइयों में चित्त [पिता] और विचार [पुत्र] के संवाद द्वारा न्याय, वैशेषिक, पातंजल, सांख्य, उत्तर एवं पूर्व मीमांसा आदि षड्दर्शनों का वर्णन कर अंत में शंकराचार्यानुमोदित केवलाद्वैत की स्थापना की गई है।

इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि गुरु-शिष्य संवाद में गुरु और गोविंद में अभेद का समर्थ निरूपण नहीं है। जबकि चित्तविचारसंवाद और संतप्रिया में गुरु-गोविंद की अभिन्नता के स्पष्ट प्रतिपादक छंदों का अध्ययन करने पर दों बातें स्पष्ट होती हैं - [१] गुरुशिष्यसंवाद इन दोंनों के पूर्व की रचना है और [२] संतप्रिया चित्त-विचार के पश्चात् की रचना है। क्योंकि संतप्रिया में गुरु और गोविंद की अभिन्नता सूचन वर्णन चित्तविचारसंवाद के इतद्विषयक विस्तृत वर्णन का घूंटा हुआ संक्षिप्त एवं अर्थघन रूप है :

चित्तविचारसंवाद

१..... जे गुरु गोविंद एक के बे १

२. गुरु कैवल्य ते गुरु, हुं कैवल्यमां शुं उचरुं १

संतप्रिया

गुरु गोविंद गोविंद सोही गुरु गुरु गोविंद गिने नहीं न्यारा ।

गुरुशिष्य संवाद और चित्तविचार संवाद में सदगुरु की प्रशंसा के साथ साथ, स्वयं के अनुभव के आधार पर, प्रपंची गुरुओं से बचने के लिए भी कहा गया है जबकि संतप्रिया में कवि विशेष रूप से ब्रह्मज्ञान सम्पन्न करने में सदगुरु की आवश्यकता पर ही बल देता है । अर्थात् मिथ्या एवं प्रपंची गुरुओं के अनुभव को जानबुझ कर भूलकर या उससे ऊपर उठ कर ही बात करता है ।

चित्तविचारसंवाद में ज्ञान के साथ-साथ परमात्मविरह एवं भक्ति की महत्ता घोषित करता है । चित्तविचारसंवाद में सूचित भक्ति एकाशीप्रकार की -नवधा- ही है जो अध्यात्म-साधक की प्रारंभिक दशा की द्योतक है । जबकि संतप्रिया में कविके शुद्धि एवं स्वानुभूत आत्मज्ञान का ही उल्लासपूर्ण कथन है ।

गुरुशिष्यसंवाद और चित्तविचारसंवाद -दोनों में विषयवस्तुगत निरूपण में स्थान-स्थान पर 'मेघ-बीजली', 'पर्वत के अंतराल में निहित जल',

'दर्पण और उसकी काई', 'चामखेडा खेल' आदि के निर्देशों से कवि की मनोहर कल्पना एवं काव्यात्मक चमत्कृति का अनुभव अवश्य किया जा सकता है। परंतु संतप्रिया में ऐसे काव्यात्मक वर्णनों की अधिकता होने के कारण उसमें कवि की परिष्कृत काव्यकला की प्रतीति विशेष रूप से होती है।

जहाँतक कवि की शैली के विकास का सवाल है तीनों कृतियों के सम्यक् अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह अवश्य कहा जा सकता है कि गुरुशिष्यसंवाद और चित्तविचारसंवाद में प्रतिपाद्य विषय उतना अधिक संप्रेषित नहीं हो पाता है जितना कि संतप्रिया में हो पाया है। अर्थात् संतप्रिया में कवि अपने कथितव्य को स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण शैली में प्रस्तुत कर सकने में अवश्य सफल हुआ है। जैसा कि गुरुशिष्यसंवाद के चतुर्थ खंड के अंतिम दोहरे की- " अंतरयामीए के कहुं ते अखे कीधो विवेक। " पंक्ति से स्पष्ट होता है कि कवि अंतर्यामी की प्रेरणा से लिखने के लिए आकुल अवश्य होता है किंतु लिखता है अपने विवेक बल के आधार पर। अर्थात्, प्रस्तुत ग्रंथ में कवि की विगलित मनोदशा का पूरा आविष्कार नहीं हुआ है। चित्तविचार संवाद की अंतिम चौपाईयों में केवलाद्वैत ब्रह्मानुभव का जो वर्णन है उससे भी प्रतीत होता है कि इन दो कृतियों का वर्ण्य-ब्रह्म " ज्ञानरूप " ही रहा है, 'रसरूप' [ब्रह्मरस] नहीं हो पाया है। अर्थात् इन कृतियों के परिशीलन से हमारे चित्त में तीव्र संवेदनात्मक आनंद की सृष्टि नहीं होती है। इसका कारण यही है कि इन कृतियों के उपादान तत्त्वों में कवि की विगलित मनोदशा के सहज आविष्कार की अपेक्षा लोककल्याणमय दार्शनिक

चिंतन की ही प्रधानता है। इस प्रकार के दार्शनिक निरूपण से केवल बौद्धिक शांति मिल सकती है, अंतर नहीं रम सकता।

निष्कर्ष रूप में इन कृतियों का क्रम इस प्रकार निर्दिष्ट किया जा सकता है गुरु शिष्यसंवाद -- चित्तविचारसंवाद और - संतप्रिया अर्थात् संतप्रिया, गुरु शिष्यसंवाद और चित्तविचारसंवाद के पश्चात् की कवि की परिष्कृत एवं स्थिर शैली तथा स्वानुभूत सहज दशा की परिचायक रचना है।

अनुभवबिंदु और संतप्रिया

अनुभवबिंदु के मंगलाचरण में गणपति, वीणाधारी सरस्वती आदि सगुण देव देवी का जो निर्गुणपरक वर्णन किया गया है उसे संतप्रिया, ब्रह्म-लीला और अलेगीता के शुद्धनिर्गुण अथवा केवलाद्वैत - ज्ञानपरक मंगलाचरणों के पार्श्व में रखकर कवि के मानसिक विकास और आत्मनिर्भरता पर विचार करने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि अनुभवबिंदु में कवि अपने कथन में आश्वस्त नहीं है। स्वानुभव वर्णन के छंद संख्या ३२, ३३ और ३४ में अन्य ब्रह्मानुभवियों के नामोल्लेख किये हैं उससे तथा केवल ३६ छंदों के प्रस्तुत लघु प्रकरण ग्रंथ में "अनुभव" शब्द का पंद्रह से भी अधिक बार जो व्यवहार हुआ है उससे भी कवि की अनाश्वस्त अवस्था का बोध और स्पष्ट होता है।

इसके अतिरिक्त "अनुभवबिंदु के छंद संख्या १५, १८, २१, २२, २३ में कवि के सिद्धांत निरूपण के कौशल और कवित्व के बिंदुओं का आस्वाद

किया जा सकता है तथा जैसा कि आचार्य उमाशंकर जोशी ने 'संतप्रिया' और 'अनुभवबिंदु' में वर्णित "स्वप्न संसार" के छंदों का उदाहरण देकर यह बताने का प्रयत्न किया है कि काव्यचमत्कृति की दृष्टि से संतप्रिया का "स्वप्न संसार" वर्णन अनुभवबिंदु के तद्विषयक वर्णन की तुलना में शिथिल है तथापि जहाँ तक समग्र निरूप्य विषय के साथ कवि की एकरूपता एवं अभिव्यक्ति की ऋजुता का मानदंड है, यह आश्वस्त होकर कहा जा सकता है संतप्रिया के दोनों प्रकरणों में प्रतिपाद्य के साथ कवि की आत्मीयता, आत्मनिर्भरता एवं अभिव्यक्ति की ऋजुता की प्रतीति विशेष रूप से होती है। उदाहरण के तौर पर प्रथम प्रकरण के ८२, ८३, ८४, ८५ तथा द्वितीय प्रकरण के ११२, ११५, ११६, ११६, १२७, १२८ और १२६ संख्यांक छंद दृष्टव्य है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संतप्रिया, अनुभवबिंदु के पश्चात् की कवि की सिद्धावस्था की रचना है।

संतप्रिया और ब्रह्मलीला

प्रस्तुत दोनों कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि ये दोनों कृतियाँ कवि की सिद्धावस्था में रची गई है। किंतु इनके मंगलाचरणों पर विचार करने से विदित होता है कि संतप्रिया के मंगलाचरण[१]

---

१. ओमकार की आद्य है अकल अरूप अनंत
कल्पितता मध्य शुन्य सी मानीनता मानंत ।। १ ।।
-संतप्रिया

की अपेक्षा ब्रह्मलीला का मंगलाचरण[१] विशेष स्पष्ट है। ब्रह्मलीला की फल-श्रुति[२] भी स्पष्ट, अर्थघन एवं सारग्राही है। संतप्रिया अपूर्ण होने के कारण उसकी ऐसी कोई स्पष्ट एवं स्वतंत्र फलश्रुति नहीं है, किंतु उसके प्रारंभ का चौथा दोहा ऐसा[३] अवश्य है जिसे ग्रंथ की फलश्रुति के रूप में ग्रहण किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त विषय वस्तु की दृष्टि से ब्रह्मलीला की अपेक्षा संतप्रिया में बिखराव विशेष है। ब्रह्मलीलामें कवि ने वेदांत और सांख्य के मतानुसार सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन कर इस सृष्टि को परब्रह्म की लीला मात्र बताकर 'सर्वं खलु इदंब्रह्मम्' के स्वानुभव का ही कथन किया है। जबकि संतप्रिया में प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करने की महत्ता, सद्गुरु के शरण में जाने की आवश्यकता, 'मनोदृश्यं इदं सर्वम्' की स्थापना, ब्रह्मानंदजनित मौज का उत्फुल्ल वर्णन, मनुष्य की रूची आसक्ति एवं देहभावना, देह की क्षणभंगुरता, परब्रह्म वर्णन आदि आदि अनेक विषयों का वर्णन निरूपण है।

---

१. ओम नमो आदि निरंजन राया जहां नहीं काल कर्म अरु माया।
जहां नहीं शब्द उच्चार न जंता आपे आप रहे उर संता ।।१।।
छंद ८ -ब्रह्मलीला

२. कहे अखो ए ब्रह्मलीला बडभागीजन गायगो
हरि हीरा अपने हृदय में अनायास सों पायगो ।।५।। - ब्रह्मलीला

३. संतप्रिया सुखवर्धनी जाके हिरदे हेत
अखा करत आलोचना ताघर आप उल्लासा देत ।। ४ ।। संतप्रिया

इस प्रकार ब्रह्मलीला की पक्व शैली की तुलना में संतप्रिया की शैली विकासोन्मुख प्रतीत होती है। इसके अतिरिक्त रूप-अरूपी परब्रह्म के खेल का जो वर्णन ब्रह्मलीला में प्रमुखरूप से किया गया है उसकी पूर्व सूचना संतप्रिया के १०६ वें दोहे से[1] ली जा सकती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संतप्रिया की रचना ब्रह्मलीला के पहले हुई है।

चित्तविचारसंवाद, अनुभवबिंदु और ब्रह्मलीला

मंगलाचरण[2] एवं फलश्रुति[3] की विषयनारूपता एवं स्पष्टता होने के

---

१. रूप अरूपी व्है रमे जे जगत दुर्लभ देव ।। १०६ ।।

-संतप्रिया

२. अ. चित्त कहे सुण रे तु विचार। हुं तुं मळी कीजे निरवार
मारे तो परिवारज बहु काम क्रोध मोहादिक सहु ।। १ ।।
- चित्तविचारसंवाद [अखानी वाणी]

आ. ओम नमो आदि निरंजन राया, जहां नहीं काल कर्म अरु माया
जहां नहीं शब्द उच्चार न जेता, आपे आप रहे उर अंत ।। १ ।।
-ब्रह्मलीला [अक्षयरस]

३अ. ते माटे सुण चित्तविचार, तेने नोहे भवसंसार
दमाम नहि ते देहने विषे, कहे अखो एम समजो सुखे ।।
-चि. वि. सं. [अखानी वाणी]

छंद ८

आ. कहे अखो र ब्रह्मलीला बडभागीजन गायगो
हरि हीरा अपने हृदयमें अनायाससें पायगो ।। ५ ।।
-ब्र. ली. [अक्षयरस]

अतिरिक्त शैलीगत विकास के सूचक आभ्यंतर प्रमाणों के आधार पर भी कहा जा सकता है कि ब्रह्मलीला, चित्तविचारसंवाद के पश्चात् की रचना है। चित्तविचारसंवाद में मेघ-बीजली[१] का जो सुंदर रूपक विस्तृत रूपसे वर्णित है वह ब्रह्मलीला में अतीव लाघवपूर्ण ढंग से प्रस्तुत[२] होने के कारण उत्तम बन पड़ा है। इससे कवि की वर्णन-शैली की व्यंजकताकी स्पष्ट सूचना ली जा सकती है। चित्तविचारसंवाद के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कवि अपने कथितव्य के वक्तव्य में तर्क बुद्धि का सहारा विशेष रूप से लेता है जबकि ब्रह्मलीला में कवि तर्क-दलील की भूमिका से ऊपर उठकर स्वानुभव के बल पर सफलता के साथ अपनी बात का समर्थ निरूपण करता है।

---

१. जेम मेघनिशा होय घोर, चंद्र नक्षत्र ढंकाणां जोर। २४१।
कीडी कुंजर नावे दृष्ट, होनी थाये तिमिरनी वृष्ट :
स्वामां झबकी दामिनी, ते दिवस नोय, नोय जामिनी। ।२४२।
पण सहुं दीठुं झातकार ज करी, जेने रहुं तुं तिमिर आवरी
सूर्य चंद्र तारा विणसार, महाअग्नि केरा झात्कार। ।२४३।
-चि०वि०सं०। अज्ञानी वाणी।

२. दृष्टव्य: अक्षयरस पृ०८७:

३. अखा ब्रह्म चैतन्यदान में भई अचानक दामिनि। १-५।
~~दृष्टव्य: अनुभवबिंदु : संपा. प्रो. मणेन्द्र त्रिवेदी सन् १९६५ पृ. १०~~

अनुभवबिंदु और ब्रह्मलीला - दोनों कृतियां, कवि की परिष्कृत भाषा-शैली एवं सिद्धावस्था की सूचक है। किंतु दोनों के मंगलाचरणों[१] का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि कवि अपने समयकी सगुणमार्गीय रचना परंपरा से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है। वह सगुण देवों और निर्गुण ब्रह्म में ऐक्य बताना चाहता है। उसके सामने यह सवाल है कि वह अपने स्वानुभवों को ऐसे किस ढंग से अभिव्यक्त करें ताकि भक्तिमार्गीय समाज की ओर से एवं साहित्यिकों की ओरसे अपने कार्य की प्रतिक्रिया न हो और स्वकार्य में सफल हो। इसी किंकर्तव्यता-मानसिक पशोपेश-कशमकशाहट की दशा के कारण कवि को अपने अनुभव कथन में "वसिष्ट", "जनक", "शिव" आदि के स्वानुभवों की समरूपता के प्रमाण

---

१. निर्गुण गुणपत्थ पात्र घांम घर गुणनु आले
अच्युत अंबरतीत, द्वीत नहीं निरंग निराले
। तेणे । आरोप्या गुण ईश, शीश धरे जेहने चंभर
निकट रहे अष्ट सिध्य, निध्यनव, बुध्य-बहु अंभर
स्वर-वीणा धरती थकी, चिद्शक्ति महासरस्वती
।तेहने । अखो जमल जाणि स्तवे, सर्वातीत सर्वनो पति ।।२।।

– अनुभवबिंदु: संपा०प्रो०भुपेन्द्र त्रिवेदी, सन्१९६४, पृ०१०

देने पड़ते हैं[1]। ब्रह्मलीला में कवि के मनमें कोई द्वंद्व नहीं है। कवि निश्चिंत होकर परब्रह्म की लीला का प्रसन्नतापूर्वक गान करता है[2]। इस गान में कवि को यह बताने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती कि अपना ब्रह्मानुभव या प्रस्तुत गान शास्त्रों में वर्णित किन किन ब्रह्मर्षियों के अनुभव के समरूप है।

ब्रह्मलीला आपातत: ब्रह्मज्ञानपूर्ण ग्रंथ है। ग्रंथ में कहीं से भी सगुण ब्रह्मवाची एक भी शब्द नहीं निकाला जा सकता। "जगत उत्पत्ति, जीव उत्पत्ति एवं ज्ञान होने पर जीवात्मा को परब्रह्म की लीला की प्रतीति" आदि सीमित वर्ण्य - विषय के कारण उसकी विषयगत एकान्विती भी उल्लेखनीय है।

---

१. ए अनुभव तुं परमाणं जाण जोई राखो हृदय ।।
समझंते समझाय, जाय गेह्नि अर्कज उदया ।
ए अनुभव भाख्यो ईश, शीश नमी पूछ्युं उमया ।
ए अनुभव कह्यो वसिष्ट, तुष्ट हुआ रघुपति तिनया
ए अनुभव शुकदेव सुं, जनक विदेहीभाख्यो
ए अनुभव नारदे अक्षा, व्यास प्रति सत दरसायो ।। ३२ ।।
ए अनुभव कह्या परब्रह्म ज्यम ब्रह्मा सत्य प्रीछ्या
ए अनुभव कह्यो हंस, अज सनकादि के पूछ्या
ए अनुभव कह्यो वेद, भेद जे चौदमे कांडे
ए अनुभव कह्या शुकदेव, भेव जे सुण्यो ब्रह्मांडे ।। ३३ ।।
-अखायरस : पृ. ८८,९०

२. दृष्टव्य : ब्रह्मलीला छंद -३ और छंद -८

अनुभवबिंदु में मंगलाचरण में ही गणपति, सरस्वती के अतिरिक्त जगदीश, श्रीपतिस्वामी, श्री हरि त्रिभुवननाथ आदि भक्तिमार्गीय शब्दावली[१] के प्रयोग के साथ साथ, अंतराभिमुखता, सद्गुरुसेवन, परमपद एवं परब्रह्म वर्णन, अध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता, जीवन्मुक्त दशा का वर्णन, समकालीन नाना-विध धर्म साधनायें षड्दर्शन के वाद-विवाद का मिथ्यात्व आदि आदि विषय-गत वैविध्य[२] के कारण कृति में प्रभावान्विति । Totality of Effect

।, विषयगत एकान्विति [Totality of Subject]

और कार्य की एकता का अभाव है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ब्रह्मलीला, अनुभवबिंदु के पश्चात् की, कवि की प्रौढ़ता की परिचायक रचना है ।

रचनाक्रम की त्रिवेणी

केवल गुजराती रचनाओं के आधार पर कवि की कृतियों का क्रम बैठाना हो तो यह कहा जा सकता है कि अनुभवबिंदु, अखेगीता के बिलकुल निकटपूर्वी की रचना है, किंतु कवि की समग्र प्रतिभा धारा अनुभवबिंदु के पश्चात् संतप्रिया और ब्रह्मलीला को अपने में मिलाने पर वैसी ही पुष्ट एवं एकरस- रंगरूप हो जाती है जैसे कि प्रयागराज में गंगा अपने प्रवाह में जमना को मिलालेने पर होती है । कवि की गुजराती और हिन्दी कृतियों की यह

---

१. दृष्टव्य: अनुभवबिंदु: सं०प्रो०नपेन्द्र त्रिवेदी छंद ४

२. दृष्टव्य: वही छंद ४, ६, ७, ८, १६, २०, २१, २२, २३.

गंगा जमनी त्रिवेणी का नाम तभी धारण कर पाएगी जब उसमें कैवल्यगीता रूप सरस्वती जुड़ेगी । अर्थात् कवि के महान प्रतिभालय से निस्तृत " संतोनां लक्षण " रूप गंगा क्रमश: 'पंचीकरण', 'अवस्था निरूपण', 'गुरु शिष्यसंवाद', 'चित्तविचारसंवाद', 'अनुभवबिंदु', 'संतप्रिया', 'ब्रह्मलीला', तथा 'कैवल्यगीता' रूप विभिन्न ब्रह्मपथस्विनियों को मिलाती हुई " अक्षय पुरूषोत्तम सागर के गीत " रूप - 'अखेगीता' में पूर्ण परिपाक धारण करती है ।

अखेगीता और कैवल्यगीता

" गीता " काव्य लिखनेवाले अखा के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती कवियों में रामभक्त [सं०१६६० वि०में विद्यमान], नरहरि [सं०१६७२ वि०में विद्यमान], भगवानदास कायस्थ [सं०१६८१-१७४६ वि०] और गोपाल [सं०१७०५ में विद्यमान] के नाम लिए जा सकते हैं । इन सब ज्ञानी कवियों ने अपने क्रमश: श्रीमद्-भगवतगीता, ज्ञानगीता, श्रीमदभगजद्गीता, गोपाल गीता - गीता काव्यों में या तो श्रीमद्भागवद्गीता का पद्यानुवाद किया है या उसके आधार पर रचना की है । अखा ने अखेगीता और कैवल्यगीता में स्वानुभूत ब्रह्मानंद का मौलिक एवं समर्थ निरूपण किया है ।

'अखेगीता' और 'कैवल्यगीता' का तुलनात्मक अध्ययन करने पर विदित होता है कि दोनों के मंगलाचरण विषयोचित है । दोनों की फलश्रुति में कृति और कविनाम निर्देश स्पष्ट है । दोनों में ग्रंथ रचना का मूल कारण

स्वयं परब्रह्म को बताकर अपने आपको निमित्त मात्र कहा गया है। इससे प्रतीत होता है कि कैवल्यगीता " अखे गीता " के निकट कुछ वर्ष पूर्व या पश्चात् की रचना है। गुजराती विद्वानों ने अखेगीता और कैवल्यगीता का साथ साथ अध्ययन किया होता तो कैवल्यगीता का समुचित मूल्यांकन हो पाता। किंतु जैसाकि कईबार होता है कि काव्य -सौंदर्ययुक्त बड़ी कृति के कारण उसी कवि की उसी विषयवस्तु से संबंधित एवं उसी समय रचित लघु रचना उपेक्षित रह जाती है, कैवल्यगीता के विषय में ऐसा ही हुआ है।

कैवल्यगीता में चारचरणी चौपाई के चौबीस श्लोक हैं। प्रत्येक श्लोक के द्वितीय एवं चतुर्थ चरण के अंत में " रे " और प्रथम श्लोक के प्रथम चरण की पुनरावृत्ति करने का निर्देश होने के कारण इसमें कवि की गायन मर्मज्ञता का परिचय होता है। पूरी रचना " आशावरी " में ही ब्रह्मलीला के साथ इसका अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि विषयगत संक्षिप्ति [Brevity], शैलीगत परिष्कृति एवं आत्मानुभव की उन्मुक्त अभिव्यक्ति की दृष्टि से दोनों कृतियाँ समान है।

अखेगीता में चालीस कड़वक एवं दश पद [चार हिंदी के और छह गुजराती के] हैं। सभी कड़वक 'राग धन्याश्री' में है। इसमें ब्रह्मानुभूतियों के आविष्कार के अतिरिक्त ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की एकता, माया-निरीक्षण, जीवन्मुक्त एवं महामुक्त के लक्षण, पुष्टि, हरिगुरुसंत सेवा, आत्मविद्या तथा षड्दर्शनों का खंडन एवं कैवलाद्वैत का युक्तियुक्त प्रतिपादन किया गया है। एक या दूसरे रूप में ये सभी वर्ण्य विषय कवि की अन्य सभी कृतियों में चर्चित अवश्य हैं किंतु प्रस्तुत ग्रंथ में इन सबका पूर्ण परिपाक एवं समाहरण हुआ है। इसके अतिरिक्त भी मंगलाचरण एवं फलश्रुति की विषया-

-नुरूपता और शैलीगत पक्वता, रचनाकाल का स्पष्ट उल्लेख, कवि की आत्म-निर्भरता एवं स्वानुभव कथन का उल्लास, दर्शन और काव्य का समन्वय, और सफल प्रबंधत्व की दृष्टि से अखेगीता कवि की अंतिम एवं सिद्धावस्था की उत्तम कृति है।

समग्र चर्चा के पश्चात् अखा की प्रामाणिक कृतियाँ इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है :

अ. गुजराती

१. अखेगीता
२. अनुभवबिंदु
३. गुरु शिष्यसंवाद
४. चित्तविचारसंवाद
५. अवस्था निरूपण
६. पंचीकरण
७. संतनां लक्षण
८. कैवल्यगीता
९. जीवन्मुक्तिहुलास
१०. चतु:श्लोकी भागवत
११. पद
१२. भजन
१३. सोरठा
१४. छप्पा
१५. तिथि
१६. वार
१७. कक्का
१८. बारहमासा
१९. आरती
२०. पत्र
२१. विष्णुपद
२२. साखियाँ

आ. हिन्दी

१. संतप्रिया
२. ब्रह्मलीला
३. एकलक्षरमणी
४. अमृतकलारमणी
५. जकड़ी
६. फूलना
७. कुंडलिया
८. धमार
९. साखियाँ
१०. पद
११. भजन

कृति संख्या

अखा की कृति संख्या कुल मिलाकर तीन हजार चारसौं नौ [३४०९] है। वह विपुल राशि इस प्रकार है –

साखियाँ	१८५०
पद	३००
झूलना	१०९
छप्पा	७५६
सोरठा	३५०
कुंडलिया	२५
भजन	७७
जकड़ी	३९
घमार	३
	३४०९

रचनाक्रम

१. संतनां लक्षण
२. पंचीकरण
३. अवस्था निरूपण
४. गुरु शिष्यसंवाद
५. चित्तविचारसंवाद
६. अनुभवबिंदु
७. संतप्रिया
८. ९. ब्रह्मलीला और कैवल्यगीता
१०. अखेगीता